क्लास-2

सेमेस्टर-2

हिंदी(प्रतिष्ठा)

जायसी का नागमती- वियोग-खंड

पद-3

प्रसंग:- प्रस्तुत अंश में नागमती की सखियां उसे हौसला देते हुए कहती हैं कि जीवन में सुख- दुख का क्रम चलता रहता है, इसलिए निराश नहीं होना चाहिए। वे नागमती को आश्वस्त करती हैं कि उनका प्रियतम एक दिन लौटकर अवश्य आएगा और फिर से वह सारी खुशियां, जिनसे नागमती वंचित हो गई थी, उन्हें दोबारा प्राप्त होगी।

व्याख्या:- नागमती की सखियां नागमती को समझाते हुए कहती हैं कि हे पटरानी! तुम्हें इतना निराश नहीं होनी चाहिए। अपने मन को समझाओ और चेतना को संभालो। भ्रमर लोलुपतावश कमल से मिलने चला जाता है, लेकिन मालती से किए गए प्रेम को याद करके दोबारा उसके पास आ जाता है। तुम्हारा पति भी एकदिन लौटकर अवश्य आएगा। पपीहे को स्वाति से प्रेम होता है। यह सोच कर तुम्हें अपने मन को धीरज देना चाहिए। धरती जैसे आकाश से प्रेम करती है, वैसे ही तुम रत्नसेन से प्रेम करती रहो। धरती का प्रेम बेकार नहीं जाता। आकाश मेघों के रूप में बरस कर पृथ्वी से आ मिलता है। ठीक उसी प्रकार तुम्हारा प्रिय भी लौटकर आएगा। हे रानी, तुम उदास मत हो।बसंत ऋतु फिर से आएगी, वही वातावरण फिर से बन जाएगा। वही भ्रमर होगा और उसी प्रकार का पुष्प-रस होगा। तुम्हारा यह शरीर रूपी वृक्ष प्रिय के आने पर फिर से हरा- भरा हो जाएगा। जैसे कुछ दिनों तक वर्षा न होने पर सरोवर का जल सूख जाता है, किंतु वर्षा होने पर सरोवर पुनः जल से भर उठता है और जो हंस सरोवर को छोड़कर चले गए थे, वे पुनः उसका स्मरण कर वापस आ जाते हैं। ठीक उसी प्रकार तुम्हारे जो प्रियतम तुम्हें छोड़ कर चले गए हैं, वे वापस आकर फिर से तुम्हें अंक में भर लेंगे। जो पौधे मृगशिरा नक्षत्र की तीव्र तपन को सहन करते हैं, उन्हें ही आर्द्रा नक्षत्र की वर्षा में पल्लवित होने का अवसर मिलता है। कहने का आशय यह है कि दुःख सहने के बाद ही असीम सुख की प्राप्ति होती है। इसलिए हे नागमती, तुम्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

विशेष:- 1. वर्षा के दस नक्षत्रों में से आर्द्रा नक्षत्र में मूसलाधार वर्षा होती है।

2. ज्येष्ठ मास में मृगशिरा नक्षत्र लगता है, तब बहुत गर्मी पड़ती है।

डॉ प्रकाश कुमार अग्रवाल

खड़गपुर कॉलेज, हिंदी-विभाग